

- (ख) 'पैरि वार जात परवाह ज्यों जलन के—'प' तथा 'ज' वर्ण की एकाधिक बार आवृत्ति।
 (ग) 'पच्छी परछीने ऐसे परे परछीने वीर'—'प' वर्ण की एकाधिक बार आवृत्ति।
 (घ) 'लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली'—'ल' वर्ण की एकाधिक बार आवृत्ति।
 (9) 'कटक कटीले केते काटि काटि'—'क' वर्ण की एकाधिक बार आवृत्ति।

प्रश्न 6. म्यान से निकलती हुई तलवार को कवि ने 'प्रलैभानु' क्यों कहा है?

उत्तर—'प्रलैभानु' का अर्थ है—प्रलय उत्पन्न करने वाला सूर्य। प्रलय कालीन सूर्य की किरणें जब पृथ्वी पर पड़ती हैं, तो भयंकर अग्नि समूह भी उपस्थित जाता है तथा सम्पूर्ण जगत उन प्रलयकारी किरणों से जलने लगता है। छत्रसाल की तलवार भी 'प्रलैभानु' के समान प्रलयकारी है क्योंकि इसके म्यान से निकलते ही शत्रु पक्ष के वीरों का नाश होने लगता है। प्रलयकारी सूर्य की भांति इसे देखकर शत्रु सेना के योद्धा भयभीत हो उठते हैं और यह तलवार घोड़ों एवं हाथियों के समूह को भी नष्ट कर देती है।

प्रश्न 7. इन कवित्तों में से तीन उपमा अलंकार और एक उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण छांटकर लिखिए—

उत्तर—(क) उपमा अलंकार के उदाहरण—

1. 'भुज भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी'
2. 'लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिन सी'
3. 'कालिका सी किलकि कलेऊ देती काल की'

(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण—

'पच्छी परछीने ऐसे परछीने वीर'

2. शंखनाद

(सियारामशरण गुप्त)

कविता का परिचय

'शंखनाद' शीर्षक कविता कविवर सियारामशरण गुप्त के 'पाथेय' नामक कविता संग्रह से ली गई है। इस कविता के माध्यम से कवि ने नवजागरण का संदेश दिया है। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति का आह्वान किया है तथा इसके लिए मृत्यु और विनाश के देवता भगवान शंकर से प्रार्थना की है कि वे भारतीयों को इतना साहसी, दृढ़ तथा धैर्यवान बना दें कि वे स्वाधीन संघर्ष में आने वाली हर बाधा, विपत्ति को हंसते-हंसते दृढ़तापूर्वक सहन कर सकें और अपने मार्ग से विचलित न हों। कवि चाहता है कि मृत्युंजय शिव भारतीयों में विनाश की शक्ति भर दें तथा अपने क्रोध से जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों तथा परम्पराओं को चकनाचूर कर दें।

(क) अर्थ-ग्रहण संबंधी प्रश्न

- (1) मृत्युंजय, इस घट में अपना कालकूट भर दे तू आज,
ओ मंगलमय, पूर्ण, सदाशिव,
रुद्र-रूप धर ले तू आज !
चिरनिद्रित भी जाग उठें हम

कर दे तू ऐसी हुंकार,
मद-मत्तों का मद उतार दे
दुर्धर तेरा दण्ड प्रहार।

शब्दार्थ—मृत्युंजय=मौत की जीतने वाला, भगवान शंकर। घट=शरीर (घड़ा)। कालकूट=जहर। मंगलमय=कल्याणकारी। सदाशिव=सदा शुभ करने वाला। रुद्र-रूप=भयावह (क्रोधी) रूप। चिरनिद्रित=बहुत समय से सोए हुए। हुंकार=जोर का शब्द। मद-मत्त=नशे में चूर। दुर्घट=कठोर प्रचण्ड। दंड-प्रहार=डंडे का प्रहार।

—उपर्युक्त पंक्तियों का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियां श्री सियारामशरण गुप्त की कविता 'शंखनाद' से उद्धृत की गई हैं। इन पंक्तियों में कवि ने भगवान शिव के रुद्र तथा प्रलयकारी रूप का आह्वान किया है। यह कविता स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लिखी गई थी इसीलिए इसमें भारतवासियों को विदेशी सत्ता को समाप्त करने के लिए शौर्य और साहस अपनाते हुए क्रांति के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा दी गई है।

व्याख्या—कवि कहता है कि हे मृत्युंजय शिव ! आज आवश्यकता इस बात की है कि तू अपना विष हमारे हृदय में भर दे अर्थात् हमें भी अपनी ही तरह कठोर तथा मृत्यु का सामना करने वाला बना दे। यद्यपि तुम्हारा एक रूप मंगलमय भी है, परन्तु आज हमें तुम्हारे उस रूप की आवश्यकता नहीं है। आज तो तुम्हें भयंकर रूप धारण करना होगा। आज तुम्हें ऐसी गर्जना करनी होगी कि चिरकाल से सोए हुए भारतवासी भी जाग जाएं अर्थात् बहुत समय से निराश और अकर्मण्य बनकर सोए हुए भारतवासी भी सचेत हो जाएं। हे शिव ! आज तुम ऐसा दंड प्रहार करो कि भारत पर शासन करने वाले अभिमानी शासकों का अभिमान चूर-चूर हो जाए और देश की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हो जाए। भाव यह है कि सत्ताधारियों का अहंकार नष्ट हो जाए और देशवासी भारत को स्वतंत्र कराने के लिए कमर कस लें।

भावार्थ—कवि भारतवासियों को आजादी प्राप्त करने के लिए अपना बलिदान करने और क्रांति के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा दे रहा है।

(2) हम अंधे भी देख सकें कुछ, धधका दे प्रलय ज्वाला।

उसमें पड़कर भस्म शेष हो, है जो जड़ जर्जर निस्सार।

यह मृत शांति असह्य हो उठी छिन्न इसे कर दे तू आज।

मृत्युंजय इस घट में अपना काल कूट भर दे तू आज।

शब्दार्थ—जर्जर=क्षीण। निस्सार=सार हीन। मृत-शांति=मृत्यु के समान सन्नाटा।

—उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियां सियारामशरण गुप्त की कविता 'शंखनाद' से उद्धृत की गई हैं। इन पंक्तियों में कवि ने भारतवासियों को देश को स्वाधीन कराने की प्रेरणा दी है। कवि ने शिव से आग्रह किया है कि वे भारतीयों के हृदय में क्रांति की ज्वाला सुलगा दें तथा शांति के स्थान पर उनके हृदय को विद्रोह के विष से भर दें।

व्याख्या—कवि कहता है कि हे शिव ! तुम इस भारत में प्रलय की ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर दो, ऐसी ज्वाला जला दो, ऐसी क्रांति मचा दो कि जो भारतवासी अपने कर्तव्य भावना से विमुख होकर अंधों की भांति अपने कर्तव्य को नहीं देख पा रहे, वे भी वस्तुस्थिति को समझ सकें,

पराधीनता के दुःख, अपमान और पीड़ा को समझ सकें, और देश की दुद्रशा को समझ सकें। हे रुद्र रूप शिव ! तू ऐसी ज्वाला भड़का दे जिसमें जीर्ण-शीर्ण विचार एवं भाव जलकर राख हो जाएं, अकर्मण्यता समाप्त हो जाए। यह मरी हुई शांति अब सही नहीं जाती, ऐसी शांति जिसमें कायरता, दुर्बलता तथा अकर्मण्यता है, अब नहीं सही जाती। क्योंकि इस शांति में मौत का सा सन्नाटा है। हे शिव शंकर ! इस शांति को नष्ट करके भारतीयों के हृदयों में विद्रोह की ज्वाला भर दे, विद्रोह का विष भर दे अर्थात् उन्हें क्रांति की शक्ति प्रदान कर।

भावार्थ—कवि को भारतीयों की अकर्मण्यता, चुप्पी और शांति अच्छी नहीं लगती। जब देश पराधीन है, तो ऐसी स्थिति में उन्हें इस प्रकार की शांति और अकर्मण्यता के स्थान पर विद्रोह की भावना प्रदर्शित करनी चाहिए और देश को विदेशी शासन से मुक्त कराना चाहिए। (यह कविता पराधीनता के युग में लिखी गई थी)

- (3) ओ कठोर तेरी कठोरता, कर दे हम को कुलिश कठोर,
विचलित न कर सके कोई भी, झंझा की दारुण झकझोर।
सिर के ऊपर के प्रहार सब, सुमन-समूह समान झड़ें
पैरों के नीचे के कांटे, मृदु-मृणाल से जान पड़ें।

शब्दार्थ—कुलिश-कठोर=त्रज के समान कठोर। विचलित=व्याकुल, अस्थिर। झंझा=आंधी-तूफान। दारुण=प्रचंड। झकझोर=हवा का झोंका। सुमन=फूल। मृदु-मृणाल=कमल के फूल का कोमल डंठल।

—उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ एवं भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत कविता 'शंखनाद' शीर्षक से उद्धृत किया गया है जिसके रचयिता कविवर सियारामशरण गुप्त हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लिखी गई इन पंक्तियों में कवि भगवान शंकर से प्रार्थना करता है कि वे भारतीयों को ऐसी दृढ़ता और सामर्थ्य प्रदान करें जिससे कि वे देश को स्वतंत्र करा सकें।

व्याख्या—हे शिव शंकर ! तुम कठोरता के भंडार हो। तुम्हारा यह कठोर रूप हमें भी वज्र के समान कठोर बना दे जिससे कि हम भयंकर से भयंकर आघियों में भी विचलित न हों, किसी भी बड़ी से बड़ी विपत्ति के सामने झुकें नहीं अर्थात् संसार की भीषण से भीषण बाधाएं हमें अपने कर्तव्य मार्ग से विचलित न कर सकें और हम स्वाधीनता के मार्ग में आने वाली हर बाधा का मुकाबला कर सकें और अपने लक्ष्य तक पहुंच सकें। हे शिव ! हमें इतना दृढ़ तथा कठोर बना दो कि सिर पर पड़ने वाली सभी विपत्तियों को फूलों के गुच्छे के समान समझ कर उन्हें सहन कर सकें और उसे ऐसे नीचे फेंक दें जैसे फूल झड़ जाते हैं। हमें अपने पांवों के नीचे आने वाला हर कांटा कमल की नाल के समान कोमल महसूस हो। अर्थात् हम हर विपत्ति को हंसते-हंसते सहन कर सकें।

भावार्थ—कवि ने यह कविता स्वतंत्रता से पूर्व लिखी थी, इसीलिए वह भगवान शिव से भारतीयों को इतना कठोर, सुदृढ़, सहनशील तथा शौर्यवान बनाने की प्रार्थना कर रहा है जिससे कि स्वाधीनता के मार्ग में आने वाली बड़ी से बड़ी विपत्ति से टक्कर ले सकें।

- (4) भय के दीप्तानल में धंसकर उसे बुझा दे पैरों से,
नव भूखण्ड अमृत के घट सा, दे ऊपर की ओर उछाल।
सागर का अन्तस्तल मथकर तेरे विप्लव का भूचाल।

जीर्ण शीर्णता के दुगों को कुसंस्कार के स्तूपों को
ढा दे एक साथ ही उठकर दुर्जय तेरा क्रोध कराल।

शब्दार्थ—दीप्तानल=जलती हुई आग। नव=नया। भूखण्ड=भूमि। घट=घड़ा। अंतस्तल=हृदय। विप्लव=क्रांति। जीर्ण-शीर्णता=गला-सड़ा होना। कुसंस्कार=बुरी आदतें। कराल=कठिन। स्तूप=ऊंचा दूह यारीला। दुर्जय=जिसे जीतना कठिन हो।

—उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियां श्री सियारामशरण गुप्त की कविता 'शंखनाद' से उद्धृत की गई हैं। इन पंक्तियों में कवि भगवान शंकर से प्रार्थना कर रहा है कि वह अपना रुद्र रूप प्रकट करके भारतीयों में शौर्य, साहस, दृढ़ता और कर्तव्य भावना भर दे जिससे कि स्वाधीनता संग्राम के मार्ग में आने वाली हर विपत्ति का दृढ़ता से मुकाबला कर सकें तथा अपना कर्तव्य पूरा कर सकें।

व्याख्या—हे शिव ! तू भारतीयों में इतना साहस भर दे कि वे भय पर विजय-पा लें और किसी भी प्रकार की विपत्तियों से न घबराएं। वे इतने साहसी हों कि भय की जलती हुई अग्नि में निडर होकर प्रवेश कर सकें और उसे अपने पैरों से बुझा भी सकें। हे रुद्र ! तेरे विप्लव का भूचाल इतना भयंकर हो कि देश भर में भूचाल आ जाए। यह भूचाल इतना भयंकर हो कि एक बार सागर के हृदय को पुनः मथकर अमृत के घड़े के समान एक नया भूखण्ड ऊपर को उछाल दे। तेरा वह विनाश रूपी भूचाल शत्रुओं के हाथों में विद्यमान खुशियों के अमृत घट को समाप्त कर दे। हे भगवान शिव ! तेरा भयंकर क्रोध पुरानी सड़ी-गली रूढ़ियों, बेकार की परम्पराओं, जो किले के समान सुदृढ़ होकर खड़ी हैं, तथा दूषित संस्कारों के टीलों को चकनाचूर कर दे। भाव यह है कि हे शिव ! तुम्हारी कृपा के बिना, तुम्हारे क्रोध के बिना भारतवासी अपनी सड़ी-गली परम्पराओं और रूढ़ियों को नहीं त्यागेंगे। आप विनाश के देवता हैं, अतः आप इन सड़ी-गली परम्पराओं को ध्वस्त कर दें।

भावार्थ—कवि कहना चाहता है कि जब तक भारतीय अपनी सड़ी-गली परम्पराओं तथा जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों का त्याग नहीं करेंगे तब तक देश का कल्याण नहीं हो सकता। शिव चूंकि विनाश के देवता हैं इसीलिए कवि ने उनसे इन दूषित परम्पराओं, सड़ी-गली बातों एवं रूढ़ियों को ध्वस्त करने की प्रार्थना की है।

- (5) कुछ भी मूल्य नहीं जीवन का हो यदि, उसके पास न ध्वंस,
ओ कृतांत हम को भी दे जा निज कृतांतता का कुछ अंश।
ओ भैरव कवि की वाणी का मृदु माधुर्य लगा दे आज,
वंशी के होंठों पर अपना निर्मम शंख बजा दे आज।

शब्दार्थ—ध्वंस=विनाश। कृतांत=विनाश, विनाश का देवता। कृतांतता=विनाश। अंश=हिस्सा।

भैरव=शिव। निर्मम=दयारहित।

—उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ तथा भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रसंग—'शंखनाद' शीर्षक कविता से उद्धृत की गई उपर्युक्त पंक्तियों के रचयिता श्री सियारामशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि स्पष्ट कर रहा है कि विनाश के बिना वन-निर्माण संभव नहीं। वह विनाश के देवता से प्रार्थना कर रहा है कि वह अपनी ऐसी ओजस्वी वाणी निकाले जिससे दृढ़ता और कठोरता के भावों का जन्म हो।

व्याख्या—जिस जीवन में विनाश की शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, उसका कुछ भी मूल्य नहीं होता। जीवन में ध्वंस अथवा विनाश का अपना ही महत्त्व होता है। विनाश के द्वारा ही नव-निर्माण संभव हो सकता है। विप्लव द्वारा ही अमृत-घट निकाला जा सकता है। जीर्ण-शीर्ण का विनाश करके ही स्वस्थ परम्पराओं द्वारा देश का नव-निर्माण किया जा सकता है। अतः हे शिव ! अपनी कठोरता का कुछ अंश भारतीयों को दे दे। अपनी विनाश शक्ति का कुछ हिस्सा भारतीयों को दे दे जिससे कि वे देश का नव-निर्माण कर सकें। हे उग्र रूप वाले शिव ! अपनी उग्र वाणी से ऐसी भयानक ध्वनि कर कि जिसे सुनकर कवि की कोमल मधुरता शरमा जाए। भाव यह है कि आज का कवि भी कोमल भावनाओं वाली रचनाओं के स्थान पर ओजवी स्वर-युक्त क्रांतिकारी रचनाएं करने लगे। हे शिव ! तू वंशी बजाने वाले होंठों में प्रवेश कर और अपने तीखे स्वर वाला शंख बजा दे।

भावार्थ—कवि का आशय है कि जीर्ण-शीर्ण का विनाश करके ही नव-निर्माण की नींव रखी जा सकती है। जिस जीवन में विनाश नहीं, वह बेकार है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लिखी गई इस कविता में कवि ने इस बात पर बल दिया है कि तत्कालीन परिस्थितियों में कोमल भावनाओं की नहीं बल्कि कठोरता और दृढ़ता भरे भावों की आवश्यकता थी। इसीलिए कवि ने शिव से प्रार्थना की है कि भारतीयों को भी अपनी कठोरता तथा विनाश-शक्ति का कुछ अंश दे दे जिससे कि स्वस्थ जीवन का निर्माण कर सकें तथा जीर्ण-शीर्ण का विनाश कर सकें।

(6) नभ को छूकर दूर-दूर तक गूंज उठे तेरा जयनाद,
घर के भीतर छिपे पड़े जो, बाहर निकल पड़े साह्लाद।
छाती खोल खुले में बढ़कर विपदाओं के साथ लड़ें,
तेरा सुदृढ़ कवि पहने हम घूम सकें चाहे जिस ओर,
ओ कठोर तेरी कठोरता कर दे हमको कुलिश कठोर।

शब्दार्थ—जयनाद=विजय का स्वर। साह्लाद=खुशी से। सुदृढ़=मजबूत। कुलिश=वज्र जैसा।

—उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ एवं भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता श्री सियाराम शरण गुप्त हैं। उनकी 'शंखनाद' शीर्षक कविता से उद्धृत की गई इन पंक्तियों में कवि भगवान शिव से प्रार्थना कर रहा है कि वे एक ऐसी भयानक ध्वनि करें जिसे सुनकर भारतीयों की कायरता जाती रहे और वे दृढ़ता से मैदान में आकर बाधाओं का सामना कर सकें।

व्याख्या—कवि भगवान शिव से प्रार्थना कर रहा है कि शिव ! आज तू अपनी उग्रवाणी से ऐसी भयानक आवाज निकाल, अपना ऐसा शंखनाद कर जिसे सुनकर भारतीय मैदान में डट जाएं तथा तुम्हारे शंख की आवाज़ आकाश में दूर-दूर तक गूंज उठे। तुम्हारी आवाज़ को सुनकर कायरों की भी कायरता और दुर्बलता का नाश हो जाए तथा वे भी छाती खोलकर संघर्ष पथपर अग्रसर होने का साहस कर सकें एवं मुसीबतों से हार न मानें। हे शिव ! तू हमें अपनी कठोरता का ऐसा सुदृढ़ कवच प्रदान कर जिसे पहनकर हम जहां जिस ओर चाहें, निडर होकर घूम सकें। हमें इतनी कठोरता प्रदान कर कि वज्र के समान कठोर हो जाएं।

भावार्थ—कवि की इच्छा है कि भगवान शिव का शंखनाद तथा भयानक ध्वनि को सुनकर भारतीयों में दृढ़ता, शौर्य, साहस और वीरता का संचार हो तथा उनकी भीरुता और कायरता समाप्त हो जाए। शिव का शंखनाद सुनकर वे अपनी मातृ भूमि को स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष के पथपर

अग्रसर हों तथा इस मार्ग में आने वाली हर बाधा का डटकर सामना करें।

(7) ओ दुस्सह तेरी दुस्सहता, सहज सत्य हम को हो जाए,
तेरे प्रलय घनों की धारा, निर्मल कर हमको धो जाए।
ओ कृतांत हमको भी दे जा निज कृतांतता का कुछ अंश
नई सृष्टि के नवोल्लास में फूट पड़े तेरा विभ्रंश।

शब्दार्थ—दुस्सह=जिसे सहन करना कठिन हो। सहज-सत्य=आसानी से सहन करने योग्य। प्रलय-घन=प्रलय के बादल। कृतांत=विनाश के देवता। कृतांतता=विनाश-शक्ति। नवोल्लास=नया उल्लास। विभ्रंश=विनाश।

—उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ तथा भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियां 'शंखनाद' शीर्षक कविता से उद्धृत की गई हैं जिसके रचयिता श्री सियाराम शरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि भगवान शिव से प्रार्थना कर रहा है कि वह हमें विनाश-शक्ति का कुछ भाग दे जिससे कि नव-निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो।

व्याख्या—कवि भगवान शिव से प्रार्थना करता है कि हे शिव ! तू बहुत कठोर है। हमें इतनी शक्ति प्रदान कर कि हम तेरी कठोरता को भी आसानी से सहन कर सकें, हम तेरे प्रहारों को भी आसानी से सहन कर सकें। मृत्यु से भी भयभीत न हों। तुम्हारे विनाशकारी बादलों की स्वच्छ धारा हमें भी निर्मल एवं स्वच्छ बना दे। हे विनाश के देवता ! तू हमें विनाश शक्ति का कुछ भाग अवश्य दे दे ताकि हम उसका उपयोग देश के नव-निर्माण के लिए कर सकें। तुम्हारा विनाश नई सृष्टि की नई खुशी के रूप में प्रकट हो जाए।

भावार्थ—विनाश के देवता का नाम सुनकर ही लोग कांप उठते हैं। कवि विनाश के देवता से ऐसा वरदान देने की प्रार्थना कर रहा है कि हम वरदान पाकर तेरे हर प्रकार के प्रहारों को सहन करने योग्य हो जाएं तथा उन निर्मम प्रहारों को सहकर अत्यंत दृढ़, साहसी और वीर बन जाएं। प्रलय की धारा के बहने के बाद पृथ्वी का कण-कण निर्मल हो उठता है, अतः प्रलय से घबराना बेकार है। कवि यह स्पष्ट कर रहा है कि विनाश के देवता की वह विनाश लीला (प्रलय) नए संसार की रचना के नए आनंद के लिए होती है।

(ख) सराहना संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

1. चिर निद्रित भी जाग उठें हम, कर दे तू ऐसी हुंकार,
मद-मत्तों का मद उतार दे, दुर्धर तेरा दंड प्रहार।
2. ओ कठोर तेरी कठोरता का दे हमको कुलिश-कठोर
3. सिर के ऊपर के प्रहार सब सुमन-समूह-समान झड़ें,
पैरों के नीचे के कांटे मृदु-मणाल से जान पड़ें।
4. भय के दीप्तानल में धंसकर उसे बुझा दें पैरों से।
5. नव मूखण्ड अमृत के घट-सा दे ऊपर की ओर उछाल
6. जीर्ण-शीर्णता के दुर्गों को, कुसंस्कार के स्तूपों को
7. ओ दुस्साह तेरी दुस्सहता सहज सत्य हमको हो जाए,
तेरे प्रलय-घनों की धारा, निर्मल कर हमको धो जाए।

उत्तर—(1) उपर्युक्त पंक्ति में 'चिर निद्रित' और 'मद-मत्तो' शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग है। भारतीयों को लम्बे समय से सोया हुआ बताया गया है। सोने से कवि का आशय नींद में सोना नहीं अपितु उनकी अकर्मण्यता से है जो लम्बे समय से गुलामी का जीवन जी रहे हैं। 'मद मत्तो' से कवि का संकेत उन अभिमानी शासकों से है जिन्होंने हमें पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। 'मद मत्तो का मद' अनुप्रास अलंकार है।

(2) उपर्युक्त पंक्ति द्वारा कवि सियाराम शरण गुप्त कठोरता के देवता शिव से प्रार्थना कर रहे हैं कि तू हमें अपनी कठोरता का कुछ अंश दे दे जिससे कि हम वज्र जैसे कठोर बन जाएं। कवि चाहता है कि भारतीय इतने कठोर बन जाएं कि चाहे विपत्तियों की कितनी ही आंधियां आएँ, पर वे विचलित न हों और देश को स्वाधीन कराकर ही दम लें। इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है तथा 'कुलिश-कठोर' में रूपक अलंकार है।

(3) 'शंखनाद' शीर्षक कविता से उद्धृत उपर्युक्त पंक्ति में कवि सियाराम शरण गुप्त कठोरता के देवता शिव से कठोरता पाकर इतने कठोर बनना चाहते हैं कि सिर पर पड़ने वाली सब चोटें फूलों के गुच्छे के समान लगे और पैरों के नीचे चुभने वाले काटे कोमल कमल-दण्ड के समान। 'सिर के ऊपर के सब प्रहार' तथा 'पैरों के नीचे के काटे' द्वारा कवि उन कठिनाइयों तथा बाधाओं की ओर संकेत कर रहा है जो देश को स्वाधीन करने तथा नवनिर्माण करने में आएंगी। 'सुमन समूह समान' तथा 'काटे मृदु-मणाल से' में उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(4) उपर्युक्त पंक्ति में कवि सियाराम शरण गुप्त स्पष्ट करते हैं कि कठोरता के देवता शिव से कठोरता पाकर हम इतने कठोर बन जाएं कि यदि कहीं भय की आग भी जलती हो, तो खुद उस आग में धंसकर अपने पैरों से उसे कुचल डालें अर्थात् निर्भीक तथा वज्र जैसे कठोर बन जाएं। 'भय के दीप्तानल' में रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।

(5) 'शंखनाद' कविता से उद्धृत उपर्युक्त पंक्ति में अत्यंत कुशलता से यह भाव स्पष्ट किया गया है कि विनाश में से ही नव-निर्माण हो सकता है। विप्लव में से ही अमृत का घट निकाला जा सकता है। जिस प्रकार समुद्र का मंथन किया गया था, तभी अमृत का घट निकला था, उसी प्रकार टूटी फूटी मान्यताओं, रूढ़ियों आदि का विनाश करके ही स्वस्थ समाज तथा नई सृष्टि का निर्माण संभव हो सकता है। 'अमृत के घट सा' में उपमा अलंकार है। नव भूखण्ड हैं—भारत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हरिण्य, रम्य और कुश।

(6) उपर्युक्त पंक्ति में कवि सियाराम शरण गुप्त ने रूपक अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है। 'जीर्ण-शीर्णता' के लिए 'दुर्ग' और 'कुसंस्कारों' के लिए 'स्तूपों' का प्रयोग किया गया है।

(7) उपर्युक्त पंक्ति में कवि सियाराम शरण गुप्त यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि शिव दुस्सह हैं इसलिए उनका प्रहार सहन करना अत्यंत कठिन है। इसीलिए शिव से प्रार्थना की गई है कि आप भारतीयों को इतनी शक्ति दें कि वे आपके प्रहारों को सह सकें तथा आपकी प्रलय की धारा से भयभीत न हों। आपकी प्रलय की धारा से यह धरा निर्मल हो जाए। कवि पुनर्निर्माण के लिए शक्ति की कामना कर रहा है। 'प्रलय-धनों' में रूपक तथा 'सहज सत्य' में अनुप्रास अलंकार है।

(ग) लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'हम अंधे भी देख सकें कुछ' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कवि ने भारतीयों को 'अंधे' कहकर संबोधित किया है क्योंकि भारतीय परावलम्बी, अकर्मण्य हो गए हैं तथा वे सच्चाई को अनुभव नहीं कर रहे हैं।

प्रश्न 2. 'यह मृत शांति असत्य हो उठी' पंक्ति में 'मृत शांति' से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर—स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लिखी गई 'शंखनाद' शीर्षक कविता से ली गई उपर्युक्त पंक्ति में कवि यह स्पष्ट करना चाहता है कि पराधीनता के युग में भारतीयों का जीवन अकर्मण्य तथा संघर्षहीन बन गया था। उस शांति में मौत का सन्नाटा था जो सहन करने योग्य नहीं था। भाव यह है कि भारतीयों ने अकर्मण्यता का परिचय देकर पराधीनता को शांतिपूर्ण स्वीकार कर लिया, यह शांति सहन करने योग्य कदापि नहीं थी। कवि चाहता है कि भारतीय शांति के स्थान पर संघर्ष करें।

प्रश्न 3. 'वंशी के होठों पर अपना निर्मम शंख बजा दे आज' पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर—स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लिखी गई कविता 'शंखनाद' से उद्धृत इस पंक्ति द्वारा कवि सियाराम शरण गुप्त कहना चाहते हैं कि आज शांति तथा कोमल भावनाओं की नहीं, ओजस्विता, शौर्य तथा कठोरता की आवश्यकता है, अतः शिव से प्रार्थना की गई है कि अपना शंखनाद करके दृढ़ता एवं कठोरता के भाव जगा दो जिससे कि वंशी की मधुर तान के स्थान पर जोश भरी आवाज गूंज उठे।

प्रश्न 4. कवि ने शिव को किस-किस नाम से संबोधित किया है ?

उत्तर—कवि सियाराम शरण गुप्त ने अपनी कविता 'शंखनाद' में भगवान शिव को—मृत्युंजय, कठोर, कृतांत, भैरव, दुर्जय, मंगलमय तथा दुस्सह जैसे नामों से संबोधित किया है।

(घ) जीवन-मूल्यों संबंधी (ड) रचनात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'शंखनाद' शीर्षक कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर—'शंखनाद' कविता के रचयिता सियाराम शरण गुप्त हैं। यह कविता पराधीनता के युग में लिखी गई थी। इस कविता में देशवासियों को बताया गया है कि नव-निर्माण के लिए ध्वंस की नितांत आवश्यकता है। भारतवासियों को सड़ी-गली, जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों, परम्पराओं, कुसंस्कारों को नष्ट करके स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहिए। कवि ने शिव के विनाशकारी रूप का आह्वान किया है जिससे कि शिव से कठोरता प्राप्त करके भारतीय इतने दृढ़ बन जाएं कि हर बाधा और विपत्ति को सहन कर सकें। शिव से प्रार्थना की गई है कि वह अपने उग्र स्वर वाला 'शंखनाद' कर दे जिससे कि कायर से कायर भी संकटों के सामने अड़ने को तत्पर हो जाएं। कवि भारतवासियों को प्रेरणा दे रहा है कि बहुत समय से अकर्मण्य होकर पराधीनता के अपमान को सहन करने के बजाय अब दृढ़ता करने का समय आ गया है।

प्रश्न 2. 'शंखनाद' कविता के भंडम में 'ध्वंस' के महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—'शंखनाद' शीर्षक कविता में कवि सियाराम शरण गुप्त नव-जीवन के निर्माण के लिए ध्वंस को नितांत आवश्यक मानते हैं। जिस प्रकार सागर का मंथन करने के बाद ही अमृत घट

की प्राप्ति हुई थी, उसी प्रकार विध्वंस के बिना नव-निर्माण की पृष्ठ भूमि तैयार नहीं हो सकती। जीर्ण-शीर्ण का विनाश करके नवीन परम्पराओं का निर्माण किया जा सकता है। जिसके पास ध्वंस की शक्ति नहीं होती, वह नव-निर्माण भी नहीं कर सकता क्योंकि यदि सड़ी-गली रूढ़ियों और कुसंस्कारों का विनाश नहीं किया गया तो नव-निर्माण की संभावना ही कहाँ है ? जिस प्रकार प्रलय का मेघ पृथ्वी के कण-कण को निर्मल कर जाता है उसी प्रकार ध्वंस भी समाज को नया रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ध्वंस के बाद ही नव-निर्माण के अंकुर प्रस्फुटित होते हैं।

प्रश्न 3. 'शंखनाद' कविता का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'शंखनाद' शीर्षक कविता के रचयिता श्री सियाराम शरण गुप्त जी हैं। इस कविता में कवि ने देशवासियों को नव-जागरण की प्रेरणा देते हुए दृढ़ता, वीरता, ओजस्विता, साहस और निर्भीकता जैसे गुणों को अपनाने का सुझाव दिया है। कविता में ओजगुण तथा वीर रस की प्रधानता है तथा अनेक लाक्षणिक शब्दों का प्रयोग भी हुआ है जैसे—'मृत शांति', 'अंधे', 'चिरनिद्रित', 'मद-मत्त' आदि। कविता में अनुपास, रूपक, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश जैसे अलंकारों का भी स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। भगवान् शिव को अनेक नामों से संबोधित करके, उनके प्रलयकारी आग धधकाने, ध्वंस-शक्ति प्रदान करके कठोर बनाने, दृढ़ता के भाव भरने तथा विनाश रूपी भूचाल लाने की प्रार्थना अत्यंत प्रेरणादायिनी तथा सुन्दर बन पड़ी है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लिखी गई इस कविता द्वारा भारतीयों को महान् प्रेरणादायिनी शक्ति प्राप्त हुई।

(च) पाठ्य-पुस्तक पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. शंकर से रुद्र रूप धारण कर शंखनाद करने की याचना कवि क्यों कर रहा है ?

उत्तर—भगवान् शंकर विनाश तथा कठोरता के देवता हैं। इसलिए उन्हें रुद्र भी कहा जाता है। जब वे रुद्र रूप धारण कर लेते हैं तो प्रलय हो जाती है और उसके बाद नई सृष्टि का जन्म होता है। कवि ने भगवान् शंकर से रुद्र रूप धारण कर शंखनाद करने की प्रार्थना इसलिए की है कि वे भारत की सड़ी-गली, जीर्ण-शीर्ण परम्पराओं, रूढ़ियों और कुसंस्कारों को ध्वस्त कर दें, निस्सार को नष्ट कर दें और इस प्रकार नव-निर्माण में जुट जाएं। दूसरे, उनके शंखनाद को सुनकर भारतवासियों के हृदय से कायरता और अकर्मण्यता दूर हो जाए तथा वे सीना तान कर संघर्ष करें और मातृ भूमि को स्वाधीन कराएं।

प्रश्न 2. इस प्रकार का शंखनाद करने की प्रार्थना भगवान् विष्णु या ब्रह्मा से न करके कवि ने महादेव रुद्र से ही क्यों की है।

उत्तर—भगवान् ब्रह्मा सृष्टि की रचना करने वाले, विष्णु पालन करने वाले और भगवान् शिव संहार (विनाश) करने वाले हैं। कवि नए समाज के निर्माण के लिए जीर्ण-शीर्ण तथा सड़ी-गली रूढ़ियों, कुसंस्कारों और परम्पराओं का नाश करना चाहता है, इसलिए उसने विनाश के देवता महादेव को ही शंखनाद करने की प्रार्थना की।

प्रश्न 3. 'चिर निद्रित भी जाग उठें हम' तथा 'हम अंधे भी देख सकें कुछ' पंक्तियों में कवि ने अपने देशवासियों को 'चिरनिद्रित' और 'अंधे' क्यों कहा है ?

उत्तर—हमारे देशवासी बहुत समय से जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों, कुसंस्कारों तथा सड़ी-गली परम्पराओं में फंसे हैं। वे गुलामी को ही अपना भाग्य मानकर, अकर्मण्य होकर निराशा तथा कायरता का जीवन जी रहे हैं। संसार के अन्य देश कहां से कहां पहुंच गए, जबकि भारतीय अब भी उनसे बहुत पीछे हैं। वे अपने कर्तव्य पथ को भुला बैठे हैं इसलिए उन्हें चिर-निद्रित कहा गया है। कवि ने भारतीयों को 'अंधे' इसलिए कहा है क्योंकि वे विदेशी शासकों के अत्याचारों को आंख होते हुए भी देख नहीं पाए। उन्होंने वास्तविकता को अनुभव करने का प्रयास नहीं किया तथा विदेशी शासकों को उखाड़ फेंकने के लिए कमर नहीं कसी।

प्रश्न 4. 'मद-मत्तों का मद उतार दे, दुर्धर तेरा दण्ड प्रहार' में किस 'मद-मत्त' का मद उतारने की प्रार्थना की गई है और क्यों ?

उत्तर—कवि ने 'मद-मत्त' से विदेशी शासकों की ओर संकेत किया है। अंग्रेज शासकों ने भारतवासियों के साथ बहुत अन्यायपूर्ण व्यवहार किया था। उन्हें इस बात का अहंकार था कि भारत जैसा विस्तृत एवं धनी देश पर उनका अधिकार है। कवि ने भगवान् शंकर से प्रार्थना की है कि वह विदेशी शासकों के अहंकार को चूर्ण कर दे जिससे कि भारत स्वाधीन हो सके।

प्रश्न 5. 'कुछ भी मूल्य नहीं जीवन का, हो यदि उसके पास न ध्वंस' द्वारा कवि ने किस विचार का प्रतिपादन किया है ?

उत्तर—विनाश और निर्माण का गहरा संबंध है। विनाश के बाद ही नव-निर्माण का प्रारंभ होता है। जैसे मृत्यु के बाद नव-जीवन की प्राप्ति होती है। नया निर्माण करने के लिए पुराने तथा जीर्ण-शीर्ण खण्डहरों को गिराना आवश्यक हो जाता है। इसी प्रकार स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए सड़ी-गली परम्पराओं तथा रूढ़ियों को मिटाना आवश्यक है। क्योंकि ये सड़ी-गली परम्पराएं तथा कुसंस्कार समाज के नव-निर्माण में बाधक बनते हैं। अतः इसीलिए कवि ने कहा है कि उस जीवन का कुछ भी मूल्य नहीं होता जिसके पास विनाश की शक्ति न हो। यदि सड़े-गले का विनाश नहीं होगा तो नव-जीवन कहां से आएगा ?

3. आशा का दीपक (रामधारी सिंह 'दिनकर')

कविता का परिचय

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'आशा का दीपक' शीर्षक कविता में हताश एवं निराश व्यक्तियों को निराशा का जीवन त्याग कर, कर्मशील बनकर जीवन-पथपर निरन्तर बढ़ते रहने की प्रेरणा दी गई है। जीवन में थक कर बैठने, विचलित या निराश होकर हिम्मत हार जाने से सफलता (मंजिल) कभी प्राप्त नहीं होती। जीवन-पथ का सच्चा राही वही है जो अपनी मंजिल पर पहुंच कर ही दम लेता है।

(क) अर्थ-ग्रहण संबंधी प्रश्न

- (1) यह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल, दूर नहीं है; थककर बैठ गए क्या भाई ! मंजिल दूर नहीं है। चिनगारी बन गई लहू की बूंद गिरी जो पग से;

सेण्ट्रल बोर्ड आफ सेकेंडरी एजुकेशन नई दिल्ली द्वारा निर्धारित नवीनतम
(10 + 2) दिल्ली एवं ऑल इण्डिया के पाठ्यक्रमानुसार तथा
मार्किंग स्कीम के आधार पर

Pioneer
REFRESHER COURSE IN

हिन्दी गाइड

कोर्स-A
कक्षा IX के लिए

शिवशंकर पाठक

2000-2001

धनपत राय एण्ड कं० (प्रा०) लि०

1682, 1710 नई सड़क, दिल्ली-110006

[दूरभाष : 326 5367, 325 0251]

Pioneer

REFRESHER COURSE
IN

हिन्दी गाइड

Class IX
A-Course

पाठक

Ph.: 0353-551822
APPROVED SUPPLIER

GENERAL BOOK AGENCIES

MORE, BAGDOGRA
DARJEELING-734422
OF ICSE, WBSE, CBSE,
and COMPETITION BOOKS

DHANPAT RAI & CO.